"चंद्रगुप्त विक्रमादित्य की उपलब्धियां"

B.A - Semester - II   Paper - CC - 3.

चंद्रगुप्त विक्रमादित्य गुप्त राजवंश का शासक था। इसका शासनकाल 375 - 414 ई० तक रहा, जिसकाल में गुप्त राजवंश ने अपने साम्राज्य की चतुर्दिक उन्नति की। गुप्तवंशी लेखों में उसे 'तत्परिगृहीत' अर्थात उसके (समुद्रगुप्त) द्वारा चुना गया, कहा गया है।

चंद्रगुप्त द्वितीय के संबंध में हमें जानकारी कालिदास के ग्रंथ और चीनी यात्री फाहियान् के यात्रा वृतांत से प्राप्त होती है।

चंद्रगुप्त का साम्राज्य विस्तार और उपलब्धियां

चंद्रगुप्त द्वितीय समस्त गुप्त राजाओं में सर्वाधिक शौर्य एवं वीरोचित गुणों से संपन्न था। शकों पर विजय प्राप्त कर उसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। वह 'शकारि' भी कहलाया। उसने मालवा, काठियावाड़, गुजरात और उज्जयिनी को अपने साम्राज्य में शामिल कर अपने पिता समुद्रगुप्त की तरह अपने राज्य का विस्तार काफी बढ़ाया। चंद्रगुप्त ने वाकाटक नरेश रुद्रसेन से अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह किया और रुद्रसेन की मृत्यु के बाद वाकाटक राज्यों को अपने राज्य में शामिल कर उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी बनाई। उसकी एक राजधानी पाटलिपुत्र भी थी।

चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का शासनकाल भारत के इतिहास का बड़ा महत्वपूर्ण समय माना जाता है। चीनी यात्री फाहियान् उसके समय 6 वर्षों तक भारत में रहा। चंद्रगुप्त काफी उदार व न्याय परायण

Scanned with CamScanner

सम्राट था। उसके समय में भारतीय संस्कृति का चतुर्दिक विकास हुआ। महाकवि कालिदास उसके दरबार की शोभा थे। वह स्वयं वैष्णव था, पर अन्य धर्मों के प्रति भी उदार भाव रखता था।

चंद्रगुप्त ने साम्राज्य को शासन की सुविधा के लिए विभिन्न प्रदेशों में विभाजित किया। सम्राट स्वयं राज्य का सर्वोच्च अधिकारी था। उसकी सहायता के लिए मंत्रिपरिषद् होती थी। शासन की सबसे बड़ी इकाई प्रांत थी। प्रांतों के मुख्य अधिकारी उपरिक कहे जाते थे।

प्रांतों का विभाजन अनेक प्रदेशों या विषयों में किया जाता था। नगरों एवं ग्रामों के शासन के लिए स्वतंत्र परिषद् होती थी।

चंद्रगुप्त द्वितीय के समय में शासकीय विभागों के अध्यक्षों में; • कुमारामात्याधिकरण • बलाधिकरण • दण्डाधिकरण • विनयशूर • महाप्रतिहार • तलवर • महादंडनायक • भटाश्वपति और उपरिक आदि प्रमुख थे।

इसके अलावा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के समय साम्राज्य की सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति भी उन्नत अवस्था में थी।

तत्कालीन चीनी यात्री फाह्यान् ने इसका वर्णन करते हुये लिखा है कि लोग राजा की भूमि जोतते हैं और लगान के रूप में उपज का कुछ अंश राजा को देते हैं। राजा न प्राणदंड देता है और न शारीरिक दंड। अपराध की गंभीरता को देखते हुये अर्थदंड दिया जाता है। बार-बार राजद्रोह करनेवाले अपराधियों का दाहिना हाथ काट लिया जाता था। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के काल में राज्याधिकारियों को नियत वेतन मिलता था।

Scanned with CamScanner

चांडालों के अतिरिक्त न तो कोई जीव हिंसा करता है, न मदिरापान करता है और न लहसुन प्याज खाता है।

पाटलिपुत्र में भव्य प्रासाद बने हुये थे। वे अत्यंत सुंदर थे। देश में चोर-डाकुओं का कोई भय नहीं था।

अपनी विजयों के परिणामस्वरुप चंद्रगुप्त द्वितीय ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। उसका साम्राज्य पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में बंगाल तक तथा उत्तर में हिमालय की तापघटी से दक्षिण में नर्मदा नदी तक विस्तृत था। चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में उसकी प्रथम राजधानी पाटलिपुत्र और द्वितीय राजधानी उज्जयिनी थी।

चंद्रगुप्त द्वितीय का काल साहित्य का स्वर्णयुग कहा जाता है। उसने दरबार में विद्वानों एवं कलाकारों को आश्रय प्राप्त था। उसके दरबार में नौरत्न थे - कालिदास, धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बेताल भट्ट, घटकर्पर, वराहमिहिर, वररुचि, आर्यभट्ट, विशाखदत्त, शूद्रक, ब्रह्मगुप्त, विष्णुशर्मा और भास्कराचार्य उल्लेखनीय थे।

चंद्रगुप्त के काल की आर्थिक संपन्नता उसकी प्रचुर स्वर्णमुद्राओं से पुष्ट होती है। इसके अतिरिक्त उसने रजत और ताम्र मुद्राओं का प्रचलन भी किया। रजत एवं ताम्र मुद्राओं का प्रचलन संभवतः स्थानीय था, किंतु उसकी स्वर्णमुद्राएँ सार्वभौम प्रचलन के लिए थी।

चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपने अवंति राज्य के विजय अभियान के बाद मालवा संवत को जो 57 ई० पू० में प्रारंभ हुआ था, विक्रम संवत का नाम दिया।

Rajesh Kr. Singh.
Asst-Prof. (History)
D.S.P.M.V.

Scanned with CamScanner